Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

वर्तमान समय में शहनाई एवं शहनाई वाद्य बनाने वाले कारीगरों की स्थिति

VINAY GANDHARV[1] & DR. ANKIT BHATT[2]

[1]Ph.D Research Scholar, Department of Music, Banasthali Vidyapith (Rajasthan)
[2]Assisitant Professor (Sitar) Department of Music Banasthali Vidyapith (Rajasthan)

सार संक्षेपिका

प्रस्तुत शोध वर्तमान में शहनाई वादन में युवाओं की कम होती रूचि एवं इस वाद्य को बनाने वाले कारीगरों की आर्थिक स्थिति तथा शहनाई बनाने वाले कारीगरों के पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आ रहे पेशे के समाप्त होने के कारणों का शोध के माध्यम से अवगत करवाया गया है।

शोधकार्य के उदेश्य: वर्तमान समय में शहनाई एवं शहनाई वाद्य बनाने वाले कारीगरों की स्थिति का अवलोकन।

कुंजी शब्द: शहनाई, कारीगर, शहनाई वादक।

भूमिका

भारतीय शास्त्रीय संगीत में संगीत वाद्यों की प्राचीन काल से बहुत महत्वता रही है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक अनेक वाद्यों का विकसित रूप देखने को मिला। भारतीय शास्त्रीय संगीत में ऐसे बहुत सारे वाद्य है, जो लोक संगीत के वाद्य यंत्र थे, इनमें से शहनाई भी एक ऐसा लोक वाद्य बना जिसने भारतीय शास्त्रीय संगीत में अपनी जगह बनाई। शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत या नाट्य नृत्य हो, वाद्य यंत्रों के बिना अपूर्ण सा माना जाता है। पुरातन काल से ही शहनाई वाद्य को मांगलिक वाद्य माना जाता है। समाज के प्रत्येक शुभ अवसरों विवाह, धार्मिक अनुष्ठानों एवं पर्वों में शहनाई वादन किया जाता था। उतर भारतीय शास्त्रीय संगीत में उस्ताद बिस्मिल्लाह खां साहब ने शहनाई जैसे कठिन वाद्य को उच्चतम स्थान प्रदान करवाया, जिससें यह वाद्य यंत्र राजदरबारों में ही नहीं बल्कि पूरे भारत और विश्व में प्रसिद्ध हो गया।

शहनाई वाद्य की उत्पति, शहनाई के प्रकार एवं अंग

शहनाई भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्राचीन एवं कलिष्ट वाद्य है। विद्वानजनों के अनुसार यह ईरानी वाद्य है। पूरे भारतवर्ष में शहनाई को मंगल वाद्य के रूप में जाना जाता है। शहनाई जहाँ शास्त्रीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, वही लोक संगीत की दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। शहनाई शब्द की उत्पत्ति सह+नाभि शब्द से हुई, जिस तरह नाभि के साथ नाल जुड़ा रहता है उसी तरह नाभि के आकार रूप चाक के पिछे पत्ता लगा रहता है। इसको मुख द्वारा फूँक देने से आवाज निकलती है। शहनाई को शाहनेय, तुरही, सुनादी आदि कहते है। शहनाई भारतीय वाद्य है या विदेशी वाद्य इस विषय में संगीत विद्वानों के अपने-अपने मत है। कई विद्वानों का मत है कि इसका वास्तविक नाम 'शाहनेय' है, जिसका अर्थ क्रमशः फूँक से बनने वाला 'बाजा' तथा 'शाह' अर्थात नाम 'शाहनेय' है, जिसका अर्थ क्रमशः फूँक से बनने वाले समस्त वाद्यों का बादशाह है। यद्यपि शहनाई नाम के किसी वाद्य का उल्लेख नहीं मिलता किन्तु सुनादी नाम से एक सुषिर वाद्य का वर्णन आया है जिसके लक्षण शहनाई से मिलते है। प0 अहोबल द्वारा रचित 'संगीत परिजात' में इसका वर्णन निम्नलिखित है:

रक्तचन्दसंजातः सुनादी सुषिरान्तरः।।
बदरीबीजतुल्यानि तच्छिद्राण्यर्धमानतः।।

सम्भवतः भारत में पहले शहनाई का कोई और नाम हो तथा मुस्लिमों के भारत आगमन के परिणामस्वरूप इसे 'शहनाई' कहा जाने लगा हो। प0 अहोबल द्वारा रचित संगीत पारिजात ग्रन्थ में शहनाई को 'सुनादी' संज्ञा से पुकारा गया है, क्योंकि उसमें 'शहनाई' नामक किसी वाद्य का उल्लेख नही मिलता बल्कि 'शहनाई' से मिलते जुलते 'सुनादी' नामक सुषिर-वाद्य का वर्णन किया गया है,

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि 'सुनादी' को ही बाद में शहनाई कहा जाने लगा है, लेकिन कुछ एक विद्वान शहनाई को 'फारसी' वाद्य मानते है। नई एक तरह का सुषिर वाद्य है जिसमें एक पत्रिका (पत्ती) लगी होती है तथा इसमें कुल छः छिद्र होते है। इस वाद्य के विषय में कहा जाता है कि जब इसके वादक ने इसे अपने राजा के समक्ष बजाया,तो वह इसकी ध्वनि से इतना प्रभावित हुआ कि उसने इसे 'नई-ए-शाह' कहा। इस तरह यह बाद में 'शहनई' अर्थात् 'शहनाई' हो गया।

अतिया बेगम का कथन है कि बुअलि सेना नामक व्यक्ति ने सेनाई नामक वाद्य का अविष्कार किया था, जो कालान्तर में शहनाई नाम से भारत वर्ष में प्रयोग होने लगा था। दक्षिण में नागसर नाम का वाद्य शहनाई जैसा होता है जो नरकुल अथवा अन्य लकड़ी का बना हुआ तथा ताँबा या चाँदी से मढ़ा होता है। यह दो से ढ़ाई फुट लम्बा बारह छिद्रों से युक्त होता है। शहनाई के साथ-साथ लगभग उसी रूप का किन्तु लम्बाई में उससे एक वाद्य सुन्दरी नफीरी के नाम से भी प्रसिद्ध रहा है। नागस्वरम शहनाई तथा सुन्दरी में फूँक की सामग्री में सामान्य अन्तर के अतिरिक्त लम्बाई में भी अन्तर होता है। यूं उन्हें सामान्य रूप से देखने पर तीनों एक से ही वाद्य लगते है।

शहनाई वाद्य लकड़ी का बना होता है तथा शहनाई वाद्य रीडयुक्त वाद्य है जिसको होठों के बीच में रखकर बजाया जाता है। इस वाद्य की लम्बाई पन्द्रह सोलह इंच होती है, जिसमें ऊपरी भाग में रीड़ या पती लगी होती है। इसमें सात छिद्र होते है, जिनको अँगुलियों द्वारा खोलने एवं बन्द करने से विभिन्न स्वर उत्पन्न होते है। इसमें आगे का भाग सीधा होता है तथा नीचे के भाग में पीतल का प्याला जैसा होता है, जिससे इसकी ध्वनि बाहर की और फैलती है।

शहनाई वाद्य के मुख्य अंग इस प्रकार से है:

(1) **रीड (पत्तुर):** ''यह एक प्रकार की घास 'नरकट' से बनाई जाती है। यह बिहार के डुमराव में सोन नदी के किनारे पाई जाती है। रीड़ अन्दर से पूरी खोखली होती है। इसी की सहायता से शहनाई में वायु को प्रवेश दिया जाता है। शहनाई का वास्तविक में अपना कोई स्वर नहीं होता। शहनाई को स्वर में बजाने के लिए सर्वप्रथम इसके रीड को अपने वश में करना पड़ता है। यदि इसका रीड आपके मुताबिक नहीं है तो शहनाई पूर्णतः बेसुरी बजेगी।

(2) **चपील**: यह रीड की सुरक्षा के लिए होता है। रीड बजाने पर खुल जाता है। इसमें पुनः डालने पर वह अपने आप जुड़ जाता है।

(3) **सूजा या सुआ**: रीड के छिद्र को खोलने के लिए हुक होता है। रीड, चपील तथा सूजा को वादक अपनी शहनाई मे ऊपर एक डोरे से बाँधे रखते है, जिसको आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग मे लाया जा सके।

(4) **पत्र**: पत्र को मुलायम करने के लिए इसे काट-काट कर पानी में डाला जाता है। कुछ लोग इसे मुँह में डालकर भी बनाते है। मुँह में लगभग आधाघण्टा पत्र को रखते है। इस प्रकार से तैयार करके जो रीड बनता है, उसमें उतम नाद निकलता है।

(5) **प्याला**: नीचे गोल पीतल का गोला सा लगाते है जिसे प्याला कहा जाता है इससे ध्वनि बाहर की ओर फैलती है।

शहनाई वाद्य का विकास

पुरातन काल से ही शहनाई वाद्य को मांगलिक वाद्य माना जाता है। समाज के प्रत्येक शुभ अवसरों विवाह, धार्मिक अनुष्ठानों एवं पर्वों में शहनाई वादन किया जाता था। इसके साथ ही शहनाई राजदरबारों और नौबतखानों का वाद्य यंत्र या जहां पर शहनाई वादक राजा के आश्रय में रहकर शहनाई वादन किया करते थे। इसके अलावा शहनाई का वादन मुहर्रम के समय मातमी नौहा पड़ा जाता था, उसके साथ भी शहनाई वादन किया जाता था। इसके अतिरिक्त शहनाई को मुख्य रूप से लोक सगीत का वाद्य माना जाता था एवं शास्त्रीय संगीत के समारोहों में इसका स्थान नगण्य सा था। शहनाई को मांगलिक अवसरों पर विशेष रूप से बजाया जाता है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

इस वाद्य यन्त्र का प्रयोग विशेषतया विवाहोत्सव, मेले-त्यौहार, लोक नाट्य आदि उत्सवों में किया जाता है। वाद्य-वृन्द में शहनाई अपनी अहम भूमिका निभाता है। लोक वाद्य वृंद में शहनाई को लय में दिखाने के लिए विभिन्न धुनों और रागों की बन्दिशों को बजाकर नगमें के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लोक वाद्य पर मुख्यतः भैरवी, पहाड़ी रागों से सम्बन्धित लोक धुने बजाई जाती है। इस वाद्य पर बजने वाली अधिकतर लोक धुने आठ, बारह, चौदह, दस तथा सोलह मात्राओं की तालों में बजाई जाती है।

नौबत खानों एवं राजदरबारों से बाहर, शहनाई वाद्य को शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में प्रतिष्ठित उच्चतर शिखर पर शहनाई वाद्य एवं वादकों को उच्च स्तर पर सम्मान दिलाने का पूर्णरूप से श्रेय उ0 बिस्मिल्लाह खां साहब जी को जाता है। उतर भारतीय शास्त्रीय संगीत में उ0 बिस्मिल्लाह खां साहब जी ने शहनाई जैसे कठिन वाद्य को उच्चतम स्थान प्रदान करवाया। जिससे यह वाद्य यंत्र राजदरबारों में ही नहीं बल्कि पूरे भारत और विश्व में प्रसिद्ध हो गया।

शहनाई वाद्य को प्रचारित-प्रसारित करने में बनारस के कलाकारों का योगदान

साथ ही राजदरबार में राजा महाराजों के मनोरंजन के लिए बनारस के बहुत सारे शहनाई वादक अनेक स्थानों पर राजाओं के आश्रय में रहा करते थे। बनारस घराने से सम्बन्ध रखने वाले पं0 गौरी शंकर जो सुप्रसिद्ध शहनाई वादक रहे इन्होंने भी शहनाई वाद्य की शिक्षा अपने शिष्यों और अपने पुत्रों को प्रदान की। गौरी शंकर के सबसे बड़े पुत्र पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना, पं0 भोलानाथ प्रसन्ना एवं पं0 विष्णु प्रसन्ना ने शहनाई वाद्य को अपनाया। इनसे पहले न जाने कितने पहले से इस खानदान में शहनाई वादन की परंपरा चली आ रही थी, जो राजाओं के दरबार में नौबत खानों में प्रचलित हुआ करती थी।

पं0 गौरी शंकर एवं उनके पुत्र पं0 रघुनाथ प्रसन्ना पश्चिम बंगाल के कुच बिहार के राजा के दरबार में नौबत खाने में शहनाई वादन किया करते थे। पं॰ रघुनाथ प्रसन्ना जी, भोलानाथ जी, विष्णु प्रसन्ना एवं पं0 अनन्त लाल से शहनाई वादन अब प्रतिष्ठित मंचों पर आ गया था। इन सभी कलाकारों ने आकाशवाणी एवं दुरदर्शन के माध्यम से शहनाई वाद्य का प्रचार प्रसार किया। भारत की आजादी तक आते-आते शहनाई वाद्य इतना विकसित हो गया कि 15 अगस्त 1947 को लाल किला की प्राचीर से शहनाई वादन करके आजाद भारत की आवाम को अपनी शहनाई से मंत्रमुग्ध कर उस्ताद बिस्मिल्लाह खां भारतीय इतिहास का हिस्सा बन गए, और जब देश अपनी आजादी का स्वर्णजयन्ती समारोह मना रहा था तब भी खां साहब ने खूब वाह-वाही लुटी।

खाँ साहब जी ने 1941 के दौर में शहनाई को मायानगरी मुम्बई तक पहुँचा दिया और संगीत निर्देशक नौशाद और बसंत देसाई से मुलाकात, इसी बीच खां साहब ने गीताबाली के साथ भूमिका निभाई। इसी दौरान 'फिल्म आवारा' में घर आया मेरा परदेसी में मुखड़ा एवं अन्तरा के दरमया शहनाई से रंग भरे। 'फिल्म बाबूल' में शमशाद बेगम के साथ शहनाई में संगत की। 1962 में फिल्म 'गुंज' उठी शहनाई में दिल का खिलौना हाए टूट गया' में शहनाई के विकास का इतिहास बन गया। बनारस के कलाकारों ने शहनाई वाद्य को अपने परिवार में तो विकसित किया ही साथ ही देश के कोने-कोने में शहनाई वाद्य का प्रचार-प्रसार किया। उ0 बिस्मिल्ला खां, पं0 रघुनाथ प्रसन्ना, पं0 भोलानाथ प्रसन्ना, पं0 विष्णु प्रसन्ना और अन्नत लाल तमाम ऐसे बुजुर्ग शहनाई वादक जिन्होंने शहनाई वाद्य को पूरे भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में इस वाद्य को एक नई पहचान दिलवाई।

पं0 दया शंकर अपनी 40 वर्षीय शहनाई अपने संगीत कक्ष में रखते है। प्रसिद्ध शहनाई वादक पं0 अनन्त लाल तथा उनके परिवार ने लगभग 450 वर्षों तक वाद्य यंत्र का वादन किया है। पं0 दया शंकर जी का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में विशेष रूप से बिस्मिल्लाह खान की मृत्यु के बाद संगीत कार्यक्रम कम हो गए है। 2012 में ऑल इंडिया रेडियो में शहनाई वादक के पद से सेवानिवृत हुए शंकर का कहना है कि 1936 में आकाशवाणी के गठन के बाद रेडियो एक ऐसा स्थान था जिसने स्वतंत्रता के बाद जब राजाओं से उनकी शक्ति छीन लेने के बाद भी संगीतकारों, शहनाई वादकों को संरक्षण दिया।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

पं0 राजेन्द्र प्रसन्ना जो शहनाई तथा बाँसुरी वाद्य दोनों में ही विश्वविख्यात कलाकार है। उनका कहना है कि शहनाई जैसे कठिनतम वाद्य को सीखने में खुद में झांकने के लिए 'बड़े पैमाने पर फेफड़ों की शक्ति और सांस पर नियंत्रण' की आवश्यकता होती है। इनका मानना है कि जब कलाकार अपने भोजन के बारे में चिंतित हो जाता है तो कला मर जाती है।

शहनाई वाद्य बनाने वाले करीगरों की स्थिति

शहनाई वाद्य की मांग में गिरावट के साथ इस वाद्य को बनाने वाले कारीगरों की संख्या भी कम हो गई है, विशेष रूप से मशहूर वाराणसी, के कारीगरों का खासतौर पर नुकसान हुआ है। ''पं0 दया शंकर वाराणसी के कारीगर मोहम्मद सफी की बात करते है, जिन्होंने बिस्मिल्लाह खां के लिए शहनाई बनाई थी और इनका यह पेशा पीढ़ियों से चला आ रहा था, लेकिन अब ये पेशा धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। जब ये शिल्प खत्म होने पर है तो सफी अपने बेटों के साथ भारत बैण्ड पार्टी में शामिल हो गए। वह अपने खाली समय में ही शहनाई पर काम करते है। अन्य कारीगरों ने जीवित रहने के लिए फर्नीचर बनाना शुरू कर दिया। संजय रिक्खी जो प्रसिद्ध Rikhi Ram and Son's दुकान के मालिक है, जो दिल्ली की सबसे पुरानें वाद्य यंत्रों की दुकानों में से एक दुकान है, अपनी कनॉट प्लेस की दुकान में स्टॉक की गई शहनाईयों को बनाने के लिए हमेशा वाराणसी के कारीगरों पर निर्भर रहे। उनके पास अब विदेशियों की बढ़ती संख्या के बावजूद शहनाई के लिए मुश्किल है, बहुत कम शहनाई बनाने वाले बचे है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध वर्तमान में शहनाई वादन में युवाओं की कम होती रूचि के कारणों एवं इस वाद्य को बनाने वाले कारीगरों की स्थिति एवं पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे शहनाई बनाने वाले कारीगरों की आर्थिक स्थिति और पेशा लगभग समाप्त होता जा रहा है।

साक्षात्कार

पं0 राजेन्द्र प्रसन्ना, चर्चा, दिल्ली, 20/10/2021, (दोपहर)

संदर्भ

पं0 शारंगदेव, संगीत रत्नाकर, पृ0 सं0 787-793 राधा पब्लिकेशन्स, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000
मिश्र लाल मणि, भारतीय संगीत वाद्य, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृ0 सं0 107